जिला आपदा प्रबन्धन प्राधिकरण
जनपद–आगरा

हीटवेव कार्ययोजना
वर्ष–2024–25

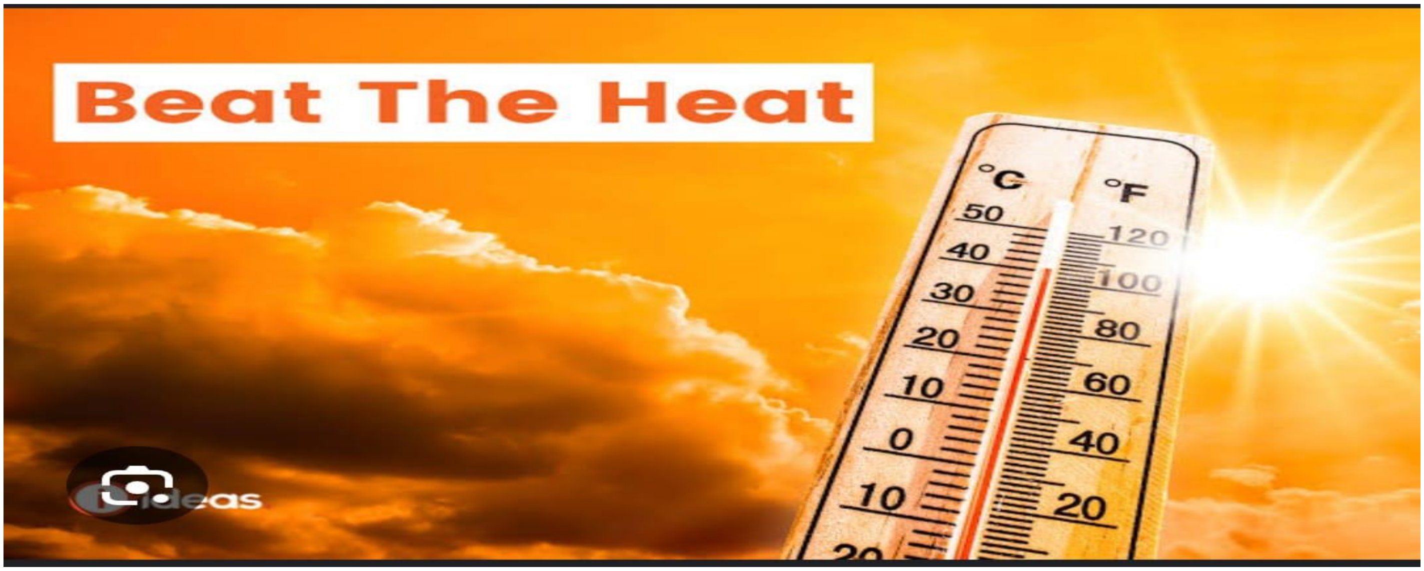

कार्यालय जिला आपदा प्रबन्धन प्राधिकरण, कलेक्ट्रेट, आगरा

मार्गदर्शन

भानु चन्द्र गोस्वामी

जिलाधिकारी

अध्यक्ष, जिला आपदा प्रबन्धन प्राधिकरण,

आगरा।

पर्यवेक्षण

शुभांगी शुक्ला

अपर जिलाधिकारी (वि0/रा0)/

नोडल अधिकारी जिला आपदा प्रबन्धन प्राधिकरण,

आगरा।

शोध, संकलन एवं सर्वेक्षण

शिवम कुमार मिश्रा

जिला आपदा विषेशज्ञ।

सहयोग

मुख्य चिकित्सा अधिकारी, मुख्य पशु चिकित्सा अधिकारी,

कृषि अधिकारी, मुख्य अग्निशमन अधिकारी एवं अन्य संबंधित विभाग।

Heat Action plan-2024

<u>परिचय (Introduction) एवं जिला प्रोफाइल (District profile)</u> :– 2011 की जनगणना के अनुसार जनपद आगरा की जनसंख्या लगभग 4418797 है। जनपद की अधिकांश जनता का जीवन यापन अधिक तापमान, वर्षा, बाढ़, सूखा, तूफान, ओलावृष्टि आदि मौसम की विभीषिकाओं से प्रभावित होता है। ग्रीष्म ऋतु में प्रदेश के अधिकतर जनपद में तापमान 40 डिग्री से 45 डिग्री या ऊपर तक पहुंच जाता है।

जनपद आगरा उत्तर प्रदेश राज्य के पश्चिमी भाग में स्थित है। इस जनपद का क्षेत्रफल 10863 वर्ग किलोमीटर है। यहां का सामान्यतः उच्चतम तापमान 47 डिग्री सेल्सियस व न्यूनतम तापमान 8 डिग्री सेल्सियस तथा औसत वर्षा 451 मिलीमीटर रहती है।**तहसीलें–** जनपद आगरा में कुल 06 तहसील क्रमशः–आगरा, खेरागढ, एत्मादपुर, किरावली, फतेहाबाद, बाह हैं। **विकास खंड**– जनपद आगरा में 15 विकासखंड क्रमशः फतेहपुर सीकरी, अछनेरा, अकोला, बिचपुरी, बरौली अहीर, खण्दौली, एत्मादपुर, जगनेर, खेरागढ, सेया, शमशावाद, फतेहाबाद, पिनाहट, बाह एवं जैतपुर कला हैं। न**गर पालिका परिषद/नगर पंचायत–** जनपद आगरा में 05 नगर पालिका परिषद क्रमशः फतेहपुर सीकरी, अछनेरा, एत्मादपुर, शमशावाद एव बाह हैं। तथा कुल 7 नगर पंचायत क्रमशः स्वामी बाग, दयालबाग, खेरागढ, फतेहाबाद, किरावली, पिनाहट व जगनेर हैं।

<u>हीटवेव (लू) की परिभाषा एवं मौसम विभाग द्वारा परिभाषित संबंधित मानदण्डः–</u>

<u>Definition of Heatwave and related criteria defined by Meteorological Department :_-</u>

भारतीय मौसम विभाग के अनुसार जब किसी जगह का स्थानीय तापमान लगातार 03 दिन तक वहॉ के सामान्य तापमान से 03 डिग्री0 से0 या अधिक बना रहे तो उसे लू या हीट वेव कहते है। विश्व मौसम संघ के अनुसार यदि किसी स्थान का तापमान लगातार 05 दिन तक सामान्य स्थानीय तापमान से 5 डिग्री0से0 अधिक बना रहे अथवा लगातार दो दिन तक 45 डिग्री से0 से अधिक का तापमान बना रहे तो उसे हीट वेव या लू कहते हे। जब वातावरणीय तापमान 37 डिग्री से0 तक रहता तो मानव शरीर पर इसका कोई दुष्प्रभाव नहीं पड़ता है। जैसे ही तापमान 37 डिग्री से0 से ऊपर बढ़ता है तो हमारा शरीर वातावरणीय गर्मी को शोषित कर शरीर के तापमान को प्रभावित करने लगता है। अधिक नमी वाले स्थानों पर 37 डिग्री से0 पर भी शरीर पर दुष्प्रभाव होने लगता है,।

विभिन्न क्षेत्रों पर हीटवेव (लू) का प्रभाव

Impact of heatwave on different sector

मानव Thermoregulatory System की सीमाऐं हैं। हमारी मॉस पेसियों में गर्मी उत्पन्न होती हैं । जो लगभग 36.70 डि0से0 होनी चाहिये। हमारे मुख्य तापमान को बनाए रखने के लिए पर्यावरण को बनाया जा सकता है। पसीने का वाष्पीकरण मानव रहित की गैलरी को शान्त होने में मदद करता है, जब यह गरम होता है फिर भी जब अत्यधिक पसीना आता है यह आन्तरिक शरीर में निर्जलीकरण की ओर जाता है। अधिक या कम तापमान गर्मी और आर्द्रता के लिए अनुकूलन लेकिन गर्मी सहिष्णुता सीमा

का ऊपरी स्तर है। वह तापमान घातक है। जब तापमान सहिष्णुता सीमा से परे, बढ़ जाता है, सूरज से वचने और सावधारी से शारीरिक परिश्रम, जलयोजन बनाए रखने और एक ठण्डी जगह में आराम का सुझााव दिया जाता है। हालांकि जब चरम गरमी की घटनाऐं लम्बे समय तक चलती रहती हैं तो गम्भीर चुनौतियों उत्पन्न होती हैं।

माह अप्रैल, 2021 में जनपद आगरा में विभिन्न स्थानों पर 37 डि0सी0 से 44 डि0से0 तक तापमान रहा है। जबकि मई, 2022 में 45 डि0से0 एवं अधिक भी रहा है।

गर्मी के मौसम में कई जनपद प्रभावित होते हैं। वर्ष 2020 एवं 2021 में दैनिक अधिकतम तापमान में 4 से 6 डि0से0 तक वृद्धि हुई है। गरम तरंगों के जिला प्रबंधन के लिए एक समन्वित बहु एजेन्सी दृष्टिकोंण की आवश्यकता है। एक हीट एक्शन प्लान के सफल कार्यान्वयन के लिए कई विविध हित धारकों और विभागों के बीच समन्वित कार्यवाही की आवश्यकता है। अत्यधिक गर्मी की घटना के पूर्वानुमान के बाद यह योजना सक्रिय है। इस योजना का मुख्य उद्देश्य गर्मी की लहर स्थिति को सम्बोधित करने के लिए की गयी मौजूदा पहल या गति विधियों को मानचित्रित करना है। हीट वेव से जुड़ी रोग दृष्टता और मृत्यु दर का प्रभाव आंकलन करें और उसके पैटर्न एंव उसके प्रवृत्तियों की जॉच करें जो गर्मी से सम्बन्धित मृत्यु द और रोग का कारण बनती है। उपयुक्त मौसम की स्थिति का दोहन करने की तत्परता प्राकृतिक खतरों के लिए प्रारम्भिक चेतावनी प्रणाली है। ध्वनि वैज्ञानिक और तकनीकि ज्ञान पर आधारित सटीक और समय पर चेतावनी प्रणाली आवश्यक है। मौसम विज्ञान के साथ गर्मी चेतावनी प्रणाली विकसित करने के लिए विभाग की आवश्यकता है। गर्मी सूचकांक पर आधारित चेतावनियॉ ध्यान में रखी जायें। सम्बन्धित अधिकारियों सहित दूरदर्शन, रेडियों, ई–मेल द्वारा चेतावनी प्राप्त की जा सकती है। जिले में आपातकालीन ऑपरेशन केन्द्र अवश्य रहें। मीडिया के सभी तरीकों के माध्यम से चेतावनी को प्रसारित करने की व्यवस्था रहे। हीट वेव का पूर्वानुमान राज्य नियंत्रण कक्ष द्वारा ई–मेल, फैक्स एवं सी0यू0जी फोन के माध्यम से भेजा जाता है। आकाशवाणी और दूरदर्शन व्यापक रूप से अपने माध्यम से इस अलर्ट को प्रसारित करते हैं।

भारत में ग्रीष्म लहर के प्रभावः–

आर्थिक प्रभावः– ग्रीष्म लहर की लगातार घटनाएँ अर्थव्यवस्था के विभिन्न क्षेत्रों पर प्रतिकूल प्रभाव डालती हैं।

1–उदाहरण के लिये, कार्य दिवसों के नुकसान के कारण गरीब और सीमांत किसानों की आजीविका नकारात्मक रूप से प्रभावित होती है।

2–ग्रीष्म लहर का दिहाड़ी मजदूरों की उत्पादकता पर भी प्रतिकूल प्रभाव पड़ता है, जिससे अर्थव्यवस्था प्रभावित होती है।

कृषि क्षेत्र पर प्रभावः– जब तापमान आदर्श सीमा से अधिक हो जाता है तो फसल की पैदावार प्रभावित होती है।

1—हरियाणा, पंजाब और उत्तर प्रदेश के किसानों ने पिछले रबी मौसम में अपनी गेहूँ की उपज में नुकसान होने की सूचना दी है। भारत भर में ग्रीष्म लहरों के कारण गेहूँ के उत्पादन में 6—7ः कमी होने का अनुमान किया गया है।

2—पशुधन भी ग्रीष्म लहरों की चपेट में आते हैं जिनसे उनकी सेहत प्रभावित होती है और उत्पादकता घटती है।

3—कॉर्नेल विश्वविद्यालय के शोधकर्ताओं का अनुमान है कि बढ़ते ग्रीष्म तनाव (िमंज`जतमे) के कारण वर्ष 2100 तक भारत के शुष्क और अर्द्ध—शुष्क डेयरी फार्मिंग में दुग्ध उत्पादन में 25ः (वर्ष 2005 के स्तर की तुलना में) की कमी आ सकती है।

बिजली के उपयोग पर प्रभावः— ग्रीष्म लहर स्वाभाविक रूप से पावर लोड को प्रभावित करती है। जैसे—वर्ष 2022 में उत्तर भारत में अप्रैल माह में औसत दैनिक शीर्ष मांग वर्ष 2021 की तुलना में 13ः अधिक थी, जबकि मई में यह 30ः अधिक थी।

मानव मृत्युः— ग्रीष्म लहरों के कारण मानव मृत्यु की स्थिति भी बनती है क्योंकि असह्य चरम तापमान, जनजागरूकता कार्यक्रमों की कमी और अपर्याप्त दीर्घकालिक शमन उपायों के कारण स्थिति गंभीर बनती जा रही है।

1—टाटा सेंटर फॉर डेवलपमेंट और शिकागो विश्वविद्यालय की वर्ष 2019 की एक रिपोर्ट के अनुसार वर्ष 2100 तक जलवायु परिवर्तन के कारण होने वाली अत्यधिक गर्मी से प्रति वर्ष 1.5 मिलियन से अधिक लोग मृत्यु के शिकार होंगे।

2—बढ़ती गर्मी से मधुमेह, परिसंचरण एवं श्वसन संबंधी रोगों के साथ—साथ मानसिक स्वास्थ्य चुनौतियों में भी वृद्धि होगी।

खाद्य असुरक्षाः— ग्रीष्म लहर और सूखे की घटनाओं के मेल से फसल उत्पादन का नुकसान हो रहा है और वृक्ष सूख रहे हैं।

1—गर्मी के कारण श्रम उत्पादकता की हानि से खाद्य उत्पादन में आने वाली अप्रत्याशित कमी स्वास्थ्य और खाद्य उत्पादन के जोखिमों को और गंभीर कर देगी।

2—ये परस्पर प्रभाव विशेष रूप से उष्णकटिबंधीय क्षेत्रों खाद्य कीमतों में वृद्धि करेंगे, घरेलू आय को कम कर देंगे और कुपोषण एवं जलवायु संबंधी मौतों को बढ़ावा देंगे।

श्रमिकों पर प्रभावः— वर्ष 2030 में कृषि और निर्माण जैसे क्षेत्रों से संलग्न श्रमिक गंभीर रूप से प्रभावित होंगे क्योंकि भारत की एक बड़ी आबादी अपनी आजीविका के लिये इन क्षेत्रों पर निर्भर है।

<u>**कमजोर वर्गों पर विशेष प्रभावः—**</u> जलवायु विज्ञान समुदाय ने वृहत साक्ष्यों के साथ दावा किया है कि ग्रीनहाउस गैसों और एरोसोल के उत्सर्जन में वैश्विक स्तर पर उल्लेखनीय कटौती नहीं की जाएगी तो ग्रीष्म लहर जैसी चरम घटनाओं के भविष्य में और अधिक तीव्र, आवर्ती और दीर्घावधिक होने की ही संभावना है।

यह याद रखना महत्त्वपूर्ण है कि भारत में ग्रीष्म लहर की घटनाओं (जैसी स्थिति अभी है) में हजारों कमजोर और गरीब लोगों को प्रभावित करने की क्षमता है, जबकि जलवायु संकट में उन्होंने सबसे कम योगदान किया है।

हीटवेव (लू) प्रबंधन कार्ययोजना का सूत्रण
Formulation of Heatwave Management Action Plan

भारतीय मौसम विभाग के अनुसार जब किसी जगह का स्थानीय तापमान लगातार 03 दिन तक वहॉ के सामान्य तापमान से 03 डिग्री0 से0 या अधिक बना रहे तो उसे लू या हीट वेव कहते है। विश्व मौसम संघ के अनुसार यदि किसी स्थान का तापमान लगातार 05 दिन तक सामान्य स्थानीय तापमान से 5 डिग्री0से0 अधिक बना रहे अथवा लगातार दो दिन तक 45 डिग्री से0 से अधिक का तापमान बना रहे तो उसे हीट वेव या लू कहते हे। जब वातावरणीय तापमान 37 डिग्री से0 तक रहता तो मानव शरीर पर इसका कोई दुष्प्रभाव नहीं पड़ता है। जैसे ही तापमान 37 डिग्री से0 से ऊपर बढ़ता है तो हमारा शरीर वातावरणीय गर्मी को शोषित कर शरीर के तापमान को प्रभावित करने लगता है। अधिक नमी वाले स्थानों पर 37 डिग्री से0 पर भी शरीर पर दुष्प्रभाव होने लगता है,। अतः जनमानस को हीट वेव से बचाने हेतु प्रभावी गतिविधियां को संचालित करने हेतु कार्ययोजना की आवश्यकता होती है। हीटवेव (लू) से कृषकों की फसलों के बचाव के लिये कृषकों को सिंचाई हेतु जल उपलब्ध कराया जाता है एवं तालाबों को भी जल से भरा जाता है।

हीटवेव (लू) प्रबंधन कार्ययोजना की आवश्यकता
Need for Heatwave Management Action Plan

हीटवेव **(लू)** से जनपद स्तर पर प्रभाव गत वर्षो से देखा गया है। विगत वर्षों में दैनिक अधिकतम तापमान, औसत अधिकतम तापमान से 6–8 डिग्री सेल्सियस तक अधिक हो गया है, जिसके क्रम में जन–मानस, पशु–हानि, कृशकों को समय–समय पर जागरूक कर हीटवेव **(लू)** के प्रभावों को न्यून कर मा0 मुख्यमंत्री की जीरो टोलेरेंस नीति को साकार करना है। पशु विभाग में भहीटवेव (लू) प्रबंधन कार्ययोजना की आवश्यकता का तात्पर्य है कि जनपद में सभी प्रभावित प्रजाति के पशुओं हेतु लू की दवाई की व्यवस्था करना एवं लू से बीमार होने पर उनकी चिकित्सा की तत्काल व्यवस्था करना ।

हीटवेव (लू) प्रबंधन कार्ययोजना का उद्देश्य

हीट–वेव वायुमंडलीय तापमान की एक स्थिति है जो शारीरिक तनाव की ओर ले जाती है, जोकभी–कभी मानव जीवन का दावा कर सकता है। हीट–वेव को उस स्थिति के रूप में परिभाषित किया जाता है जहां अधिकतम तापमान होता है। एक ग्रिड बिंदु पर 3˚C या सामान्य तापमान से अधिक, लगातार 3 दिनों या उससे अधिक के लिए। दुनिया मौसम विज्ञान संगठन एक गर्मी की लहर को पांच या अधिक लगातार दिनों के रूप में परिभाषित करता है, जिसके दौरान

दैनिक अधिकतम तापमान औसत अधिकतम तापमान से 5 डिग्री सेल्सियस अधिक है। अगर किसी भी स्थान का अधिकतम तापमान लगातार दो दिनों तक 45°C से अधिक बना रहता है लू की स्थिति कहलाती है।पर्यावरण का तापमान 37 डिग्री सेल्सियस पर रहने पर मानव शरीर को कोई नुकसान नहीं होगा। जब भी पर्यावरण का तापमान 37 डिग्री सेल्सियस से ऊपर बढ़ता है, मानव शरीर गर्मी प्राप्त करना शुरू कर देता है वातावरण से। यदि आर्द्रता अधिक है, तो व्यक्ति ऊष्मा तनाव विकारों से भी पीड़ित हो सकता है 37 डिग्री सेल्सियस या 38 डिग्री सेल्सियस पर तापमान। आर्द्रता के प्रभाव की गणना करने के लिए हम हीट इंडेक्स वैल्यू का उपयोग कर सकते हैं। हीट इंडेक्स इस बात का माप है कि वास्तव में कितना गर्म महसूस होता है जब सापेक्ष आर्द्रता को वास्तविक के साथ जोड़ा जाता है हवा का तापमान। एक उदाहरण के रूप में, यदि हवा का तापमान 34 डिग्री सेल्सियस और सापेक्ष आर्द्रता 75þ है, तो हीट इंडेक्स––कितना गर्म महसूस है हीटवेव (लू) प्रबंधन कार्ययोजना का उद्देश्य है कि किसी भी आकस्मिक परिस्थिति में तत्काल जनपद स्तर पर व्यवस्था कर किसी भी प्रकार की आपात स्थिति को रोका जा सके।

होता है 49°C। सापेक्ष आर्द्रता होने पर समान प्रभाव केवल 31°C पर पहुँच जाता है। हीटवेव **(लू)** से जनपद स्तर पर प्रभाव गत वर्षो से देखा गया है। विगत वर्षों में दैनिक अधिकतम तापमान, औसत अधिकतम तापमान से 6–8 डिग्री सेल्सियस तक अधिक हो गया है, जिसके क्रम में जन–मानस, पशु–हानि, कृषकों को समय–समय पर जागरूक कर हीटवेव **(लू)** के प्रभावों को न्यून कर मा0 मुख्यमंत्री की जीरो टोलेरेंस नीति को साकार करना है।

जनपद में लू के प्रति जोखिम का आंकलन
(कमजोर वर्ग एवं क्षेत्र की पहचान करना)

जो लोग 65 वर्ष से अधिक आयु के सबसे अधिक जोखिम वाले लोग होते हैं , शिशु व छोटे बच्चे, गर्भवती या स्तनपान करवाने वाली महिलाएँ , लोग जिनका वजन ज़्यादा है या जो स्थूलकाय हैं , लोग जो अधिक चल फिर नहीं सकते , लोग जो अपने आप अकेले रहते हैं, जिनका कोई घर नहीं है या कोई सामाजिक सहारा नहीं है , लोग जो गर्म वातावरण में काम करते हैं , लोग जो गर्मी में जोशपूर्ण रूप से व्यायाम करते हैं , लोग जिन्हें लम्बी, पुरानी बीमारियाँ है (जैसे कि दिल की बीमारी, ऊँचा रक्त चाप, डाईबिटीज या गुर्दे की बीमारी, मानसिक बीमारी, डिमेन्शिया, शराब या अन्य मादक द्रव्यों को लेना) , लोग जिन्हें घातक बीमारी है, जैसे कि कोई संक्रामक रोग जिसमें बुखार या आँतों में सूजन (gastroenteritis) की बीमारी हो (दस्त अथवा अब उल्टी आना)। गर्मी के मौसम में सभी का ध्यान रखना चाहिए पर कई लोगों को गर्मी के कारण गम्भीर हो सकते है। यदि जनपद आगरा में उक्त से सम्बन्धित ऐसा कोई क्षेत्र नही हैं। जिससे पशुपालन/पशु प्रभावित हो किसी भी स्थिति में अगर प्रभवित हो जाता है तो जनपद स्तर पर पूर्ण तैयारी कर ली जाती है।

हीटवेव (लू) कार्ययोजना की प्रमुख रणनीतियॉ
Key Strategies of the Heatwave Action Plan
हीटवेव पूर्व चेतावनी प्रसार तंत्र
wave Early Warning Communication system

मौसम विभाग—लखनऊ के द्वारा प्राप्त दिशा निर्देष के कम में अधीनस्त अधिकारियों को समयान्तर्गत किसी भी आपदा से जनमानस, पशु—हानि, एवं कृषि हानि न हो के अन्तर्गत संबन्धित को निर्देशित कर पूर्ण कार्यवाही प्रत्येक स्तर से करायी जा रही है। कार्यवाही हेतु पत्राचार के माध्यम से भी आदेशित कर दिया जाता है। हीटवेव **(लू)** से जनपद स्तर पर प्रभाव गत वर्षो से देखा गया है। विगत वर्षों में दैनिक अधिकतम तापमान, औसत अधिकतम तापमान से 6—8 डिग्री सेल्सियस तक अधिक हो गया है, जिसके क्रम में जन—मानस, पशु—हानि, कृशकों को समय—समय पर जागरूक कर हीटवेव **(लू)** के प्रभावों को न्यून कर मा0 मुख्यमंत्री की जीरो टोलेरेंस नीति को साकार करना है। पशु विभाग में भहीटवेव (लू) प्रबंधन कार्ययोजना की आवश्यकता का तात्पर्य है कि जनपद में सभी प्रभावित प्रजाति के पशुओं हेतु लू की दवाई की व्यवस्था करना एवं लू से बीमार होने पर उनकी चिकित्सा की तत्काल व्यवस्था करना ।

''क्या करें और क्या ना करें'' के संबन्ध में जनपद आगरा द्वारा सोशल मीडिया/प्रिन्ट मीडिया/इलेक्ट्रोनिक मीडिया के माध्यमों से एडवाइजरी जारी की गयी और जनपद के प्रत्येक व्यक्ति को लू से बचाने व जागरूक करने के लिए जागरूकता एवं प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित कराए इसके क्रम में उपजिलाधिकारी /तहसीलदार/ बी0एस0ए0/ डी0आई0ओ0एस0/ खण्ड विकास अधिकारी/ अधिशासी अधिकारी नगर पालिका/पंचायत एवं जिला आपदा विशेषज्ञ आदि सभी को निर्देष भी दे दिये।

विभिन्न विभागों के उत्तरदायित्व

(Roles and Responsibilities of various Departments)

विभाग का नाम **Department**	**विभिन्न विभागों के उत्तरदायित्व (Roles and Responsibilities of various Departments)**
स्वास्थ्य विभाग जनपद–आगरा	• .प्रचार प्रसार हेतु आईईसी सामग्री को गर्मी के मौसम में मुद्रित करने का प्रस्ताव है। आई0ई0सी0 के माध्यम से जन–जागरूकता अभियान चलाना प्रभावकारी होगा। • प्रचार माध्यमों द्वारा जनता को ''क्या करें, क्या न करें'' के बारे में जानकारी देना तथा अन्तर्विभागीय समन्वय स्थापित करना। ● हीट वेव रोग में प्रभावी निरोधात्मक एवं प्राथमिक उपचार (फर्स्ट एड ट्रीटमेन्ट) की जानकारी चिकित्सकों द्वारा फार्मासिस्ट हेतु आवश्यक तथा महत्वपूर्ण है। • आशा को O.R. S दियाजाएगा।अपने–अपने क्षेत्रों में फील्ड विजिट के दौरान घर–घर वितरण के लिए। जलवायु परिवर्तन को स्थिर रखने के लिए वन एवं कृषि विभाग के साथ अन्तर्क्षेत्रीय समन्वय स्थापित किया जायेगा। • जुलाई के महीने में भी गर्मी के मौसम में की जाने वाली गतिविधियों को जारी रखने की योजना बनाई गई है। •अप्रैल से जून के महीने के दौरान हीट सिंकोप हीट स्ट्रोक और अन्य हीट डिसऑर्डर से पीड़ित व्यक्तियों के विस्तृत केस स्टडी की योजना बनाई गई है
कृषि विभाग जनपद–आगरा।	1. समाचार पत्रों के माध्यम से स्थानीय मौसम एवं तापमान की जानकारी किसानों तक पॅहुचाना। 2. किसान पाठषाला और गोश्ठी/किसान मेला के माध्यम से कृशकों को जागरूक करना।

	3. किसान भाई सुबह व षाम के समय सिंचाई करें, दोपहर में न करें, जिससे खेत में नमी बनी रहे। 4. किसानों को बताना कि गेहूँ की कटाई दोपहर में न करें। सुबह व षाम के समय करें। 5. किसान भाई खेत में काम करते समय पीने का पानी साथ में रखें। 6. जायद की फसलें बाजरा, मक्का, उर्द एवं मूँग की उन्नत प्रजातियों की समय से बुवाई करें। 7. जायद की फसल जैसे– बाजरा/मक्का के खेत में नमी बनी रहे जिससे बाली/भुट्टे में बीज की गुणवत्ता अच्छी रहे। 8. विलम्बित मानसून के सम्बन्ध में धान की एक छोटी अवधि की रोपाई की जानी चाहिए।
सिंचाई विभाग	सिंचाई विभाग के माधम से जनपद स्तर पर हीटवेव लू–के दौरान वभाग की जनपद स्तर पर व्यक्तिगत जिम्मेदारियाँ कृषकों की फसलों के बचाव के लिये कृषकों को सिंचाई हेतु जल उपलब्ध कराया जाना है एवं कृषकों के पशुओं को पानी पीने हेतु तालाबों को भी जल से भरा जाता है।
जिला विद्यालय निरीक्षक	माध्यमिक शिक्षा विभाग द्वारा समस्त प्रबन्धक/प्रधानाचार्यो को हीटवेव के सम्बन्ध में पूर्व से निर्देश प्रदान कर समस्त छात्र/छात्राओं एवं अध्यापको जानकारी दी जायेगी तथा प्रचार–प्रसार किया जायेगा।
बेसिक शिक्षा विभाग	शिक्षा विभाग द्वारा समस्त प्रबन्धक/प्रधानाचार्यो को हीटवेव के सम्बन्ध में पूर्व से निर्देश प्रदान कर समस्त छात्र/छात्राओं एवं अध्यापको जानकारी दी जायेगी तथा प्रचार–प्रसार किया जायेगा।
मनोरंजन विभाग	जनपद के सभी मॉल एवम सिनेमा घरो में हीट वेव पोस्टर और हीट वेव की लघु फिल्म के माध्यम से प्रचार प्रसार किया जायेगा ।
पशु विभाग	हीटवेव के संदर्भ में विभाग की जनपद स्तर पर व्यक्तिगत जिम्मेदारी है कि अत्यधिक गर्मी के मौसम में चलने बाली लू से पशुओं में सम्भावित बीमार बुखार, दस्त आदि पर तत्काल प्रभावी नियन्त्रण करना चिकित्सा विभाग की टीमों द्वारा तत्काल होने वाली बीमारियों पर नियन्त्रण रख पाना आदि विभाग की व्यक्तिगत जिम्मेदारियॉ है एवं किसी भी विषम परिस्थिति में उच्च अधिकरियों को वस्तुस्थिति से अवगत कराया

	जाता है। उक्त समय में पशुओं के स्वास्थ्य के प्रति जागरूक रहते हुए आने वाले अगले गर्मी के मौसम से पूर्व सर्तक रहते हुए जनजागरूकता अभियान चलाते हुए पशुपालको को गर्मी से बचाव हेतु जैसे– उन्हे छाया में रखना एवं समय समय पर नहलाना आदि की जानकारी प्रदान की जाती है अप्रैल से जून के मध्य प्राय गरमी अधिक होती है अतः सभी पशुपालको को कैम्पों के माध्यम से दवाईयॉ, मिनरल मिक्चर आदि वितरण की जाती है कि एवं भारत सरकार के द्वारा चलाये जा रहे खुरपका/मुहॅपका एवं गलाधोटू रोग का निःशुल्क टीकाकरण कराया जाता है सम्बन्धित पशु चिकित्साधिकारियो/गठित टीम के माध्यम से टीकाकरण अवश्य कराया जाता है। जुलाई सितम्बर तक वारिश का मौसम रहता है उक्त समय में गलाघोटू बीमारी हो जाती है जिसके लिए जनपद स्तर पर टीका मगा लिया जाता है एवं जनपद में टीकाकरण करा लिया जाता है। नबम्वर से दिसम्वर तक प्रायः सर्दी का मौसम रहता है इसमें पशुओं के ठण्ड से बचाने के उपाय किये जाते है। जनपद में इस साल मुहॅपका/खुरपका रोग की 6,84,000 एवं गलाधोटू रोग का 8,32,950 डोज का टीकाकरण किया जा चुका ळें
अग्निशमन विभाग	अग्नि विभाग के माध्यम से हीटवेव के समय अत्यधिक तापमान होने के कारण अग्नि दुर्घटनाओं में बृद्धि की सम्भावना बनी रहती है, जिस पर तत्काल कार्यवाही करने हेतु सभी संशाधन जैसे मानव व मशीनों को सदैव तैयारी हालत में रखना तथा जनसाधारण को अग्नि दुर्घटनाओं की रोकथाम व बचाव के उपायों से निरन्तर प्रचार प्रसार के माध्यम से जागरूक करना।
जल–निगम	जल निगम (नगरीय) उ0प्र0 सरकार का एक उपक्रम है, जोकि शहरी क्षेत्र में पेयजल एवं सीवरेज संभवरण के निर्माण कार्यों का सम्पादन करता है। कार्य पूर्ण होने पर संचालित अवस्था में सम्बन्धित नगर पालिका/नगर पंचायत को रख–रखाव एवं संचालन हेतु हस्तान्तरित कर देता है। जलापूर्ति सुनिश्चित करने का सम्पूर्ण

	उत्तरदायित्व सम्बन्धित नगर पालिका परिषद/नगर पंचायतों द्वारा सम्पादित किया जाता है।
परिवहन विभाग, आगरा	बस स्टैंडों और अन्य सार्वजनिक स्थानों पर सुरक्षित परिवहन के लिए स्वास्थ्य टीमों की तैयारी एव ंपीने के पानी तथा यात्रियों के लिए लू से बचाव की उचित व्यवस्था कराना। बस स्टैण्डों पर यात्रियों के लिए छायां एवं पेयजल की व्यवस्था करना। वभागीय स्तर पर **लू–प्रकोप (Heat Wave)** से बचाव एवं राहत हेतु **''क्या करें क्या न करें''** का व्यापक प्रचार–प्रचार अपने विभागीय स्तर से कराना सुनिश्चित करें।
पंचायती राज विभाग	ग्रामीण क्षेत्र के सार्वजानिक स्थलों , चौराहों व् आवश्यकतानुसार सम्बंधित ग्रामो में पानी की टंकी / टेंकरों आदि की व्यवस्था की जाये . आवश्यकतानुसार ग्रामीण क्षेत्र / स्थलों पर जहा छाया हो लोगो का ठहराव होता हो जगह का चिन्नांकन करते हुए स्थलों पर शीतल पेयजल की व्यवस्था करना. जनपद के सभी पक्के मकानों की छतो को वाइट कलर से पेंट का कार्य करवाने हेतु सम्बंधित को निर्देशित किया जाये .

विभागवार
हीटवेव/लू के पूर्व के समय ''जनवरी–मार्च'' लू/हीटवेव के दौरान ''अप्रैल–जून'' लू/हीटवेव के बाद के समय ''जुलाई–दिसम्बर''के दौरान जिम्मेदारियां/कार्रवाईयाँ

विभाग का नाम **Department**	**कार्रवाईयाँ** **Activities** लू के पूर्व (जनवरी–मार्च) Pre heat season (Jan. to March)	**कार्रवाईयाँ** **Activities** लू के दौरान (अप्रैल–जून) During the heat season (April to June)	**कार्रवाईयाँ** **Activities** लू के बाद (जुलाई–दिसम्बर) Post heat season (July to December)

स्वास्थ्य विभाग जनपद–आगरा	•सभी स्वास्थ्य केन्द्रों पर गर्मी से होने वाली बीमारियों और विकार में काम आने वाली दवाइयां व उपकरण पर्याप्त मात्रा में उपलब्ध करा दिए गए हैं। •मार्च के महीने में हीटवेव रोगों के शीघ्र निदान और प्रबंधन के बारे में स्वास्थ्य कर्मियों का प्रशिक्षण प्रस्तावित है	• .प्रचार प्रसार हेतु आईईसी सामग्री को गर्मी के मौसम में मुद्रित करने का प्रस्ताव है। आई0ई0सी0 के माध्यम से जन–जागरूकता अभियान चलाना प्रभावकारी होगा। • प्रचार माध्यमों द्वारा जनता को ''क्या करें, क्या न करें'' के बारे में जानकारी देना तथा अन्तर्विभागीय समन्वय स्थापित करना। ● हीट वेव रोग में प्रभावी निरोधात्मक एवं प्राथमिक उपचार (फर्स्ट एड ट्रीटमेन्ट) की जानकारी चिकित्सकों द्वारा फार्मासिस्ट हेतु आवश्यक तथा महत्वपूर्ण है। • आशा को अपने–अपने क्षेत्रों में फील्ड विजिट के दौरान घर–घर वितरण के लिए। O.R.S/enerzal/glucose दिया जाएगा।	•जलवायु परिवर्तन को स्थिर रखने के लिए वन एवं कृषि विभाग के साथ अन्तर्क्षेत्रीय समन्वय स्थापित किया जायेगा। • जुलाई के महीने में भी गर्मी के मौसम में की जाने वाली गतिविधियों को जारी रखने की योजना बनाई गई है। •अप्रैल से जून के महीने के दौरान हीट सिंकोप हीट स्ट्रोक और अन्य हीट डिसऑर्डर से पीड़ित व्यक्तियों के विस्तृत केस स्टडी की योजना बनाई गई है।
कृषि–विभाग	1. समाचार पत्रों के माध्यम से स्थानीय मौसम एवं तापमान की जानकारी किसानों तक पॅहुचाना। 2. किसानों को बताना कि गेहूॅं की कटाई दोपहर में न करें। सुबह व शाम के समय करें। 3. जायद की फसलें बाजरा, मक्का, उर्द एवं	1. जायद की फसलों में सुबह व शाम को आवश्यक सिंचाई करें, जिससे खेत में नमी बनी रहे। 2. किसान भाई खेत में काम करते समय पीने का पानी साथ में रखें। 3. किसान भाई सुबह व शाम के समय सिंचाई करें। दोपहर में न करें।	1. वर्षा ऋतु में खेत की मेड़ों पर वृक्ष लगाऐं। 2. किसान भाईयों को बताना है कि फसल अवशेष न जलायें।

	मूँग की उन्नत प्रजातियों की समय से बुवाई करें। 4. उच्च तापमान के कारण फसलों में गर्मी के तनाव के कारण 15–25 प्रतिषत औसत उपज हानि हो जाती है। 5. उच्च तापमान के कारण फसल क्षति का मुख्य कारण मुख्य रूप से फूलों का गिरना तथा नये पौधों का मुरझा जाना। 6. हीटवेव(लू) का प्रभाव अधिकांश रबी एवं जायद की फसलों पर पड़ता है। 7. तापमान में किसी भी प्रकार का अत्यधिक परिवर्तन उत्पादकता को प्रभावित करता है।	4. जायद की फसल जैसे मक्का के खेत में नमी बनी रहे जिससे भुट्टे में बीज की गुणवत्ता अच्छी रहे। 5. बाजरा की फसल में समय पर सिंचाई करें। 6. मूँग की तुड़ाई शाम के समय करें। अधिक तापमान में न करें। 7. तापमान में किसी भी प्रकार का अत्यधिक परिवर्तन उत्पादकता को प्रभावित करता है।	
सिंचाई खण्ड आगरा	सिंचाई विभाग के द्वारा माह जनवरी और मार्च के समय में सिंचाई हेतु कृ षकों से संपर्क कर आकडें तैयार कर, अन्य स्थानों पर पानी की उपलब्धता हेतु समस्त कार्यो का सम्पादन कर लिया जाता है।	कृषको को सिंचाई हेतु जल उपलब्ध कराया जाता है एवं तालाबों में भी जल से भर कर जल उपलब्धता मुहइया कराये जाने हेतु कार्य किये जाते है। क्यों कि हीटवेव के समय पानी जल ही जीवन होता है।	जो कार्य लू के दौरान (अप्रैल–जून) किये जाते है यही प्रक्रिया लू के बाद (जुलाई–दिसम्बर) भी जारी रहती है।
जिला विद्यालय निरीक्षक आगरा	समस्त विद्यालयों में आगामी माह में अत्यअधिक गर्मी से बचाव हेतु कक्षा/कक्षों में	समस्त माध्यमिक विद्यालयों के प्रबन्धकों एवं प्रधानाचार्यो को पत्र जारी कर निर्देशित करते हुये छात्र/छात्राओ को लू के दौरान बिन्दुवार सावधानियॉ रखने की सलाह–	मौसम परिवर्तित होने पर शरीर को पूर्ण रूप से ढकने वाले कपडो का इस्तमाल करने हेतु

	छात्र/छात्राओं की संख्या के अनुसार पंखो की व्यवस्था सुनिश्चित कर ली जाय। ठण्डे एवं शुद्ध पेयजल की व्यवस्था तथा विद्यालयों में प्राथमिक चिकित्सा की व्यवस्था की जाय।	1. छात्र/छात्राआ एवं शिक्षकों को पर्याप्त और नियमित अंतराल पर पानी पीते रहे। 2.खुद को हाईड्रेड रखने के लिये ओ0आर0एस0 घोल , नारियल पानी, नीबू पानी छाछ, आदि घरेलू पेय पदार्थो का इस्तमाल करें 3. हल्के रंग के ढीले ढाले और सूती कपडे पहने। 4. धूप में निकलते समय सिर को ढक कर रखे 5.विद्यालयों में साफ एवं ठण्डे पानी की व्यवस्था किया जाना। 6. बहुत अधिक आवश्यकता होने पर धूप/गर्मी में घर से वाहर निकले। 7. कक्षा–कक्षों की खिडकियों को खुला रखें और कमरों में पंखों की व्यवस्था करें। 8. अचानक ठण्डी जगह से एक दम गरम जगह में न जायें। 9.गर्मी के मौसम में चाय कॉफी गरम पेय का सेवन कम करें एवं मसालेदार चीजों का सेवन कम करें। सभी छात्र/छात्राओं को सलाह दी जाये कि घर से निकलते समय खाली पेट न जाये। हल्का व शीघ्र पचने वाला भोजन करें।	समस्त छात्र/छात्राओं को जागरूक किया जाय। जुलाई अगस्त माह में वर्षा वाले मौसम में होने वाली बिमारियों के प्रति छात्र/छात्रओं को जागरूक किया जाना
बेसिक शिक्षा विभाग	शिक्षा विभाग द्वारा समस्त प्रबन्धक/प्रधानाचार्यो को हीटवेव के सम्बन्ध में	जनपद के सभी स्कूलों में हीट वेव पोस्टर चस्पा कर प्रचार प्रसार करना .	जिन स्कूलों पे प्रोजेक्टर उपलब्ध हो उनमे हीट वेव लघु फिल्म चलवाई जाये.

	पूर्व से निर्देश प्रदान कर समस्त छात्र/छात्राओं एवं अध्यापको जानकारी दी जायेगी तथा प्रचार–प्रसार किया जायेगा।	सभी छात्र/छात्राओं को सलाह दी जाये कि घर से निकलते समय खाली पेट न जाये। हल्का व शीघ्र पचने वाला भोजन करें। कक्षा–कक्षों की खिडकियों को खुला रखें और कमरों में पंखों की व्यवस्था करें।छात्र/छात्राआ एवं शिक्षकों को पर्याप्त और नियमित अंतराल पर पानी पीते रहे।	ग्राम प्रधानो के माध्यम से स्कूलों के हैंडपंप सही कराया जाना .एवम जहा वाटर कूलर हो वहा वाटर कूलर सही कराया जाना. समस्त छात्र/छात्राओं को जागरूक किया जाय। जुलाई अगस्त माह में वर्षा वाले मौसम में होने वाली बिमारियों के प्रति छात्र/छात्रओं को जागरूक किया जाना
मनोरंजन विभाग	जनपद के सभी मॉल एवम सिनेमा घरो में हीट वेव पोस्टर के माध्यम से प्रचार प्रसार किया जायेगा ।	जनपद के सभी मॉल एवम सिनेमा घरो में और हीट वेव की लघु फिल्म के माध्यम से प्रचार प्रसार किया जायेगा ।	जनपद के सभी मॉल एवम सिनेमा घरो में वाटर कूलर लगवाने हेतु सिनेमा घरो के मालिको को निर्देशित करना .
पंचायती राज विभाग	ग्रामीण क्षेत्र के सार्वजानिक स्थलों , चौराहों व् आवश्यकतानुसार सम्बंधित ग्रामो में पानी की टंकी / टेंकरों आदि की व्यवस्था की जाये .	आवश्यकतानुसार ग्रामीण क्षेत्र / स्थलों पर जहा छाया हो लोगो का ठहराव होता हो जगह का चिन्नांकन करते हुए स्थलों पर शीतल पेयजल की व्यवस्था करना.	जनपद के सभी पक्के मकानों की छतो को वाइट कलर से पेंट का कार्य करवाने हेतु सम्बंधित को निर्देशित किया जाये .

परिवहन विभाग, आगरा	बस स्टैंडों और अन्य सार्वजनिक स्थानों पर सुरक्षित परिवहन के लिए स्वास्थ्य टीमों की तैयारी एव ंपीने के पानी तथा यात्रियों के लिए लू से बचाव की उचित व्यवस्था कराना।	बस स्टैण्डों पर यात्रियों के लिए छायां एवं पेयजल की व्यवस्था करना।	वभागीय स्तर पर **लू–प्रकोप (Heat Wave)** से बचाव एवं राहत हेतु **"क्या करें क्या न करें"** का व्यापक प्रचार–प्रचार अपने विभागीय स्तर से कराना सुनिश्चित करें।
पशुपालन विभाग	उक्त समय में पशुओं के स्वास्थ्य के प्रति जागरूक रहते हुए आने वाले अगले गर्मी के मौसम से पूर्व सर्तक रहते हुए जनजागरूकता अभियान चलाते हुए पशुपालको को गर्मी से बचाव हेतु जैसे– उन्हे छाया में रखना एवं समय समय पर नहलाना आदि की जानकारी प्रदान की जाती है	अप्रैल से जून के मध्य प्राय गरमी अधिक होती है अतः सभी पशुपालको को सलाह दी जाती है कि वे अपने पशुओं को भारत सरकार के द्वारा चलाये जा रहे खुरपका/मुहॅपका रोग का निःशुल्क टीकाकरण कराये एव गलाघोटू बीमारी के टीकाकरण भी जो कि निःशुल्क विभाग द्वारा लगाये जा रहे है सम्बन्धित पशुचिकित्साधिकारियो/गठित टीम के माध्यम से टीकारण अवश्य कराये।	जुलाई के माह में प्रायः अगस्त तक वारिश का मौसम रहता है उक्त समय में गलाघोटू बीमारी हो जाती है जिसके लिए जनपद स्तर पर टीका मगा लिया जाता है एवं जनपद में टीकाकरण करा लिया जाता है। नबम्वर से दिसम्वर तक प्रायः सर्दी का मौसम रहता है इसमें पशुओं के ठण्ड से बचाने के उपाय किये जाते है जनपद में मुहपॅका/खुरपका रोग की 7,90,000 एवं गलाघोटू रोग का

			5,39,875 डोज का टीकाकरण किया जा चुका है।
अग्निशमन तथा आपात सेवा उ0प्र0	अग्निशमन / जीवरक्षा दृष्टिकोण से अग्निशमन यूनिटों को संशाधनों के सहित 24x7 के अनुसार क्रियाशील रखेंगे	लू के दौरान अग्निदुर्घटना / जीवरक्षा कार्यों हेतु मानव व मशीनों को सदैव तैयारी हालत में रखना तथा जनसाधारण को अग्नि दुर्घटनाओं की रोकथाम व बचाव के उपायों से निरन्तर प्रचार प्रसार के माध्यम से जागरूक करना।	अग्निशमन / जीवरक्षा दृष्टिकोण से अग्निशमन यूनिटों को संशाधनों के सहित 24x7 के अनुसार क्रियाशील रखेंगे।

हीटवेव (लू) से संबंधित बीमारियों का प्रबंधन (Managing Heat Wave Related Illness)

विभिन्न हीट वेव रोगो/ विकारों के लक्षण एवं प्रथमोपचार :– हीट संबंधी रोग (हीट डिसऑर्डर) लक्षण प्रथमोपचार सन बर्न त्वचा में लालीमा तथा दर्द, सूजन, फफोले, बुखार तथा सरदर्द साबुन का उपयोग करते हुये शावर आदि में स्नान कराना ताकि तेल से बन्द रंध्र खुल जाए और शरीर प्राकृतिक रूप से शीतल हो सके। यदि फफोले पाये जाते है तो सूखे विसंक्रमिक ड्रेसिंग का उपयोग करे तथा चिकित्सकीय सलाह लें। हीट क्रैम्प्स उदरीय मांश पेशियों तथा हाथ,पैर की तकलीफ देह एंठन (स्पाज्म); ज्यादा पसीना आना। पीड़ित व्यक्ति को ठण्डे तथा छायादार स्थान पर ले जाए, क्रैम्पिगं मांसपेशियों पर दबाव डाले ंतथा ऐंठन से आराम हेतु हल्की मालिश करें।पानी की बूंद बूंद पिलायें। यदि जी मचले तो पानी देना बन्द कर दें। हीट एक्जाशन अत्यधिक पसीना आना, कमजोरी; त्वचा ठण्डी पीली तथा चिप–चिपी, सरदर्द। सामान्य तापमान संभव, बेहोशी, उल्टी। ठन्डे स्थान में मरीज को लेटाये। वस्त्र को ढीला करें। ठण्डे कपड़े का उपयोग करें, मरीज को पंखा करें या वातानुकूलित स्थान में ले जाए। पानी की बूंद बूंद करके पिलायें; यदि जी मचले तो इसे देना बन्द कर दे। यदि उल्टी होती है तो 108 नम्बर की एम्बुलेंस द्वारा चिकित्सालय में भर्ती करायें। हीट स्ट्रोक (सन स्ट्रोक) उच्च शारीरिक तापमान(106 डिग्री फा0 या अधिक) गर्म शुष्क त्वचा। तेज जोरदार नाड़ी (पल्स); बेहोशी आना तथा मरीज को पसीना आना बंद हो जाए।हीट स्ट्रोक गंभीर चिकित्सकीय स्थिति। 108 तथा 102 नम्बर पर एम्बुलेंस को चिकित्सा सेवा हेतु तत्काल कॉल करना चाहिए, या मरीज को तुरन्त अस्पताल ले जाना चाहिए। विलम्ब प्राण घातक साबित हो सकता है। मरीज को तत्काल ठण्डे वातावरण मे ं ले जाना चाहिए या बर्फीले ंपानी की स्पंजिंग करते रहना चाहिए।

- हीट ववे से प्रभावित मृतकों की पहचानः– हीट वेव से होने वाले मृतको ं एवं परिवार को सरकार द्वारा आर्थिक राहत दी जाती है। अतः मृत्यु के कारण की पहचान किया जाना आवश्यक है। हीट वेव प्रभावितों

की पहचान करना तथा इनसे हुई मृत्यु को दर्ज करनाः— हीट वेव प्रभावितों की पहचान करना तथा इनसे हुई मृत्यु/मृतको ं को दर्ज करना महत्वपूर्ण है। इसके साथ ही पूर्व के अनुभवों से यह भी स्पष्ट होता है कि गलत रिपोर्टिंग को सत्यापित किया जाए, जिसके लिए निम्नलिखित उपाय किये जा सकते हैः—

○ विशेष स्थान तथा समय के अधिकतम तापमान को दर्ज किया जाए।

○ रोग संबधंी घटनाओं (डिजीज इन्सीडेन्स), पंच—नामा तथा दूसरे ं गवाहों या प्रमाणों या वर्बल ऑटोप्सी दर्ज करना।

○ कारणों सहित पोस्ट मार्टम, चिकित्सीय जॉच की रिपोर्ट।

○ स्थानीय अधिकारी या स्थानीय निकाय द्वारा पूछताछ/सत्यापन रिपोर्ट

हीटवेव (लू) से संबंधित बीमारी की रोकथाम।

(Prevention of Heat Wave Related Illness)

- हीट वेव का सर्विलॉन्स।
- आर0आर0 टी0 को भेजना।
- हीट स्ट्रोक के प्रति संवेदनशील (ससेप्टिबल) जन समुदाय की विशिष्ट देखभाल।
- कार्य/व्यवसाय सम्बन्धित समर्थन एवं परामश
- मीडिया अभियान तथा आई0ई0सी0 क्रिया—कलाप।
- प्रिंट, इलेक्ट्रॉनिक तथा सोशियल मीडिया के माध्यम से जन समुदाय में जागरूकता लाने

हेतु वृहद स्तर पर आई0ई0सी0 अभियान चलाना।

ओ0पी0डी0 में हीट वेव से बचाव हेतु ओ0आर0एस0 के घोल का हीट स्टोक से बचाव हेतु जनता को जागरूक किया जायेगा।

हीटवेव रोगों/विकारों के लक्षण एवं प्रथमोचार।

(Identification of Heat Wave Related Illness & First Aid)

हीटवेवरोगों/विकारों के लक्षण – गर्मी से संबंधित बीमारियों में शरीर में पानी की कमी (कमीलकतंजपवद) या गर्मी से ऐंठन (बतंउचे), गर्मी से थकान, उष्णता से आघात होना (ीमंज`जतवाम) व मांसपेशियों में दर्द , मांसपेशियों में मरोड व जो बीमारियाँ पहले से ही है, उनका ज़्यादा बिगड़ जाना शामिल हैं। बहु त अधिक पसीना आना (ठंडी व गीली त्वचा) , त्वचा में पीलापन , तेज़ व कमज़ोर नब्ज़ चलना , हल्की व तेज़ साँस आना ,थकान होना व चक्कर आना ,सिर दर्द , जी मिचलाना या उल्टी आना , बेहोशी

प्रथमोचार–

- जो भी आप कर रहे हों वह बंद कर दें और ठंडी जगह पर लेट जाएँ, टाँगें थोड़ी सी उँची कर लें
- पानी या पतला किया हु आ फलों का रस (4 हिस्से पानी में 1 हिस्सा रस) पीएँ
- ठंडे पानी के फु व्वारे से या टब में नहाएँ
- मरोड़ को कम करने के लिए अपने हाथ–पैरों की मालिश करें व ठंडे पैक लगाएँ
- ऐंठन बंद हो जाने के बाद बहु त शक्ति लगने वाली गतिविधि को कुछ घंटों तक न करें (थकान से उष्णता संबंधी थकान/उष्णता से आघात हो सकता है)
- यदि कोई सुधार न हो तो डॉक्टर की सलाह लें

हीटवेव (लू) से प्रभावित मृतकों की पहचान करना तथा आंकड़ो का संग्रहण।

(Identification of Heat Wave Related Casualties & Collection of Data)

आकड़े प्राप्त करना तथा उनका विश्लेषणः–

राष्ट्रीय स्तर पर हीट वेव (लू) नोटीफाइड आपदा में शामिल नहीं है, इसलिए हीटवेव से सम्बन्धित रोगी तथा मृतकों की सही सूचना तथा आंकड़ें उपलब्ध नहीं है। ऐसी स्थिति में स्थिति से निपटने तथा शमनात्मक कार्यवाही किये जाने हेतु यह अति आवश्यक है कि हीट वेव से मरने वाले व्यक्तियों की आयु वर्ग, लिंग, व्यवसाय सम्बन्धित आंकड़े एकत्र किये जाए। इसके अतिरिक्त मृत्यु घर में या बाहर हुई एवं आर्थिक स्थिति के भी आंकड़े एकत्र करना आवश्यक है।

हीटवेव (लू) से संबंधित बीमारियों के प्रबंधन के लिये जन स्वास्थ्य सुविधाओं की पूर्व तैयारी

(Public Health Facilities preparedness for Managing of Heat Related Illness)

- स्वास्थ्य केन्द्रों पर गर्मी से होने वाली बीमारियों और विकार में काम आने वाली दवाइयां व उपकरण पर्याप्त मात्रा में उपलब्ध करा दिए गए हैं।
- मार्च के महीने में हीटवेव रोगों के शीघ्र निदान और प्रबंधन के बारे में स्वास्थ्य कर्मियों का प्रशिक्षण प्रस्तावित है
- प्रचार माध्यमों द्वारा जनता को ''क्या करें, क्या न करें' ' के बारे में जानकारी देना तथा अन्तर्विभागीय समन्वय स्थापित करना।
- हीट वेव रोग में प्रभावी निरोधात्मक एवं प्राथमिक उपचार (फर्स्ट एड ट्रीटमेन्ट) की

  जानकारी चिकित्सकों द्वारा फार्मासिस्ट हेतु आवश्यक तथा महत्वपूर्ण है।

  • आशा को O-R-S दिया जाएगा। अपने–अपने क्षेत्रों में फील्ड विजिट के दौरान घर–घर वितरण के लिए।

(Do's & Don's during Heat Wave)

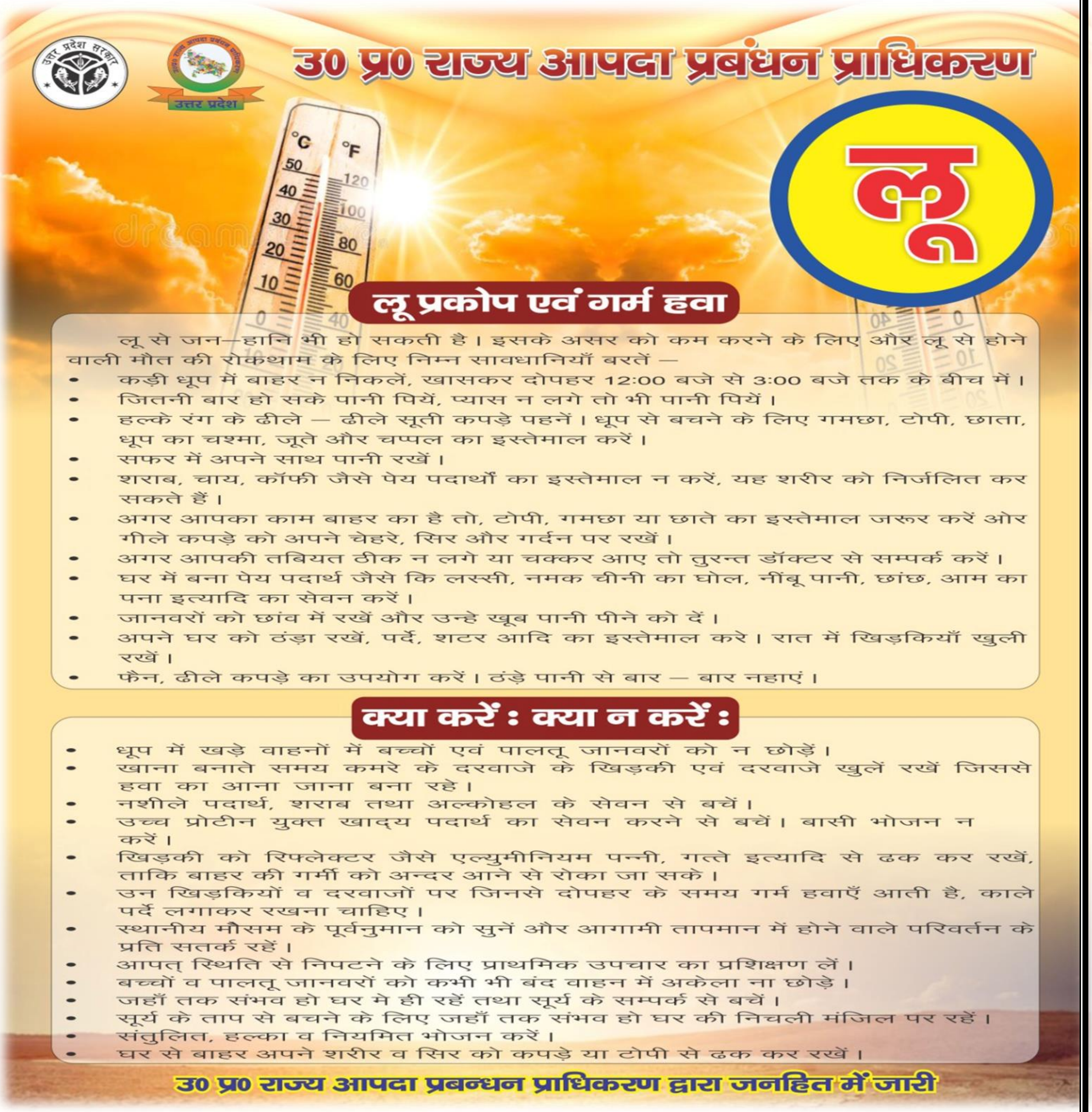

हीट वेव की स्थिति शरीर की कार्य प्रणाली पर प्रभाव डालती है, जिससे मृत्यु भी हो सकती है। इसके प्रभाव को कम करने के लिए निम्न तथ्यों पर ध्यान देना चाहिएः–

क्या करेंः–

1. प्रचार माध्यमों पर हीट वेव/लू की चेतावनी पर ध्यान दें।
2. अधिक से अधिक पानी पियें, यदि प्यास न लगी हो तब भी।
3. हल्के रंग के पसीना शोषित करने वाले हल्के वस्त्र पहने।
4. धूप के चश्मे, छाता, टोपी व चप्पल का प्रयोग करें।
5. अगर आप खुले में कार्य करते हैं तो सिर, चेहरा, हाथ पैरों को गीले कपड़े से ढके रहें तथा छाते का प्रयोग करें।
6. यात्रा करते समय पीने का पानी अपने साथ ले जाऐं।
7. ओ0आर0एस0 घर में बने हुए पेय पदार्थ जैसे लस्सी, चावल का पानी (मांड), नीबू पानी, छाछ आदि का उपयोग करें जिससे कि शरीर में पानी की कमी की भरपाई हो सके।
8. हीट स्ट्रोक, हीट रैश, हीट कैम्प के लक्षणों जैसे कमजोरी, चक्कर आना, सरदर्द, उबकाई, पसीना आना, मूर्छा आदि को पहचाने।
9. यदि मूर्छा या बीमारी अनुभव करते हैं तो तुरन्त चिकित्सीय सलाह लें।
10. जानवरों को छायादार स्थानों पर रखें तथा उन्हें पर्याप्त पानी पीने को दें।
11. अपने घरों को ठण्डा रखें, पर्दे दरवाजे आदि का उपयोग करें तथा शाम/रात के समय घर तथा कमरों को ठण्डा करने हेतु इसे खोल दें।
12. पंखे, गीले कपडों का उपयोग करें तथा बारम्बार स्नान करें।
13. कार्य स्थल पर ठण्डे पीने का पानी रखें/उपलब्ध करायें।
14. कर्मियों को सीधी सूर्य की रोशनी से बचने हेतु सावधान करें।
15. श्रम साध्य कार्यों को ठण्डे समय में करने/कराने का प्रयास करें।
16. घर से बाहर होने की स्थिति में आराम करने की समयावधि तथा आवृत्ति को बढ़ायें।
17. गर्भस्थ महिला कर्मियों तथा रोगग्रस्त कर्मियों पर अतिरिक्त ध्यान देना चाहिए।

क्या न करें:–

1. बच्चों तथा पालतू जानवरों को खड़ी गाड़ियों में न छोडें।
2. दोपहर 12 से 03 बजे के मध्य सूर्य की रोशनी में जाने से बचें।
3. गहरे रंग के भारी तथा तंग कपड़े न पहनें।
4. जब बाहर का तापमान अधिक हो तब श्रमसाध्य कार्य न करें।
5. अधिक नमी वाले समय में खाना बनाने से बचें, रसोई वाले स्थान को ठण्डा करने के लिये दरवाजे तथा खिड़कियाँ खोल दें।
6. शराब, चाय, कॉफी, कार्बोनेटेड, सॉफ्ट ड्रिंक आदि के उपयोग करने से बचें क्योंकि यह शरीर में निर्जलीकरण करता है।
7. पानी, छाछ आदि का उपयोग करें, जिससे कि शरीर में पानी की कमी की भरपाई हो सके।
8. हीट स्ट्रोक, हीट रैश, हीट क्रैम्प के लक्षणो जैसे कमजोरी, चक्कर आना, सरदर्द,उबकाई, पसीना आना, मूर्छा आदि को पहचानें।

जिला आपदा प्रबंधन प्राधिकरण/जिला प्रशासन द्वारा की गयी गतिविधियां
(Activities under taken by DDMAs/District Administration)

उत्तर प्रदेश का एक बहु–आपदा प्रभावित जनपद है, जो भूकंप के जोन–3 में स्थित है और हिमाचय के निचले क्षेत्रों में अवस्थित होने के कारण जनपद की वर्षा, ऑधी–तुफान, वज्रपात और सूखा के प्रति अति–संवेदनशील है जनपद में किसी भी प्रकार की बडी नहरन होने कारण बाढ़ प्रभावित नही है।

अप्रत्याशित रूप से घटित होने वाली आपदाओं से निपटने हेतु सहयोगी आपातकालीन विभागों व सभी संबंधित हितधारकों द्वारा बेहतर पूर्व–तैयारी एवं प्रबंधन की आवश्यकता होती है। विगत कई वर्षों से जिला आपदा प्रबन्धन प्राधिकरण, आगरा द्वारा न्यूनीकरण उपायों के क्रियान्वयन और पूर्व–तैयारी सम्बन्धी दक्षता बढ़ाने हेतु स्थानीय प्रशासन एवं सहयोगी विभागों के समन्वय में नियमित रूप से पूर्वाभ्यास व माकड्रिल कार्यकर्मों का आयोजन किया जाता रहा है। पूर्वतैयारी में सामाजिक–आर्थिक व्यवधानों व पर्यावरणीय ह्रास को कम करके आपदाओं के जोखिम को कम करने पर विशेष ध्यान दिया जाता है, जिससे जनपद में जीवन, व्यक्तिगत संपत्तियों, सार्वजनिक संपत्तियों तथा आजीविका की हानि को न्यून किया जा सके तथा सामाजिक समुत्थान सुनिश्चित किया जा सके।

आगरा जनपद के संवेदनशील क्षेत्रों में आपदा पूर्व–तैयारियों एवं समुदाय की क्षमताओं को बढ़ाने हेतु जिला आपदा प्रबन्ध प्राधिकरण, आगरा द्वारा विधिवत रूप से मॉकड्रिल का आयोजन किया जाता रहा है।

मॉकड्रिल के आयोजन में प्रभावी आपदा प्रबंधन एवं समुचित प्रतिक्रिया सुनिश्चित करने के लिए संबंधित विभागों एवं हितधारकों का गहनता पूर्ण प्रशिक्षण पर प्रमुखता से जोर दिया जाता है। उपरोक्त मॉकड्रिल प्रशिक्षण में नाजुक समुदायों को आपदाओं के दौरान से निपटने तथा त्वरित निकासी हेतु आवश्यक क्षमतावर्धन करने के साथ सम्बंधित रिस्पांस एजेंसियों व विभागों के साथ समन्वय करने के बारे में प्रशिक्षित किया जाता हे।

आगरा जनपद में आपदा जोखिम के न्यूनीकरण हेतु जिला आपदा प्रबन्धन प्राधिकरण, आगरा द्वारा उठाये गए कुछ कदमों तथा किये गये कार्यों का विवरण निम्न संलग्नकों में विस्तृत रूप से दिया गया है।

Uttar Pradesh State Heat Action Plan

उत्तर प्रदेश राज्य आपदा प्रबंधन प्राधिकरण द्वारा जनहित में जारी

तकनीकी सहयोग यूनिसेफ, उत्तर प्रदेश एवं इंडियन इंस्टीट्यूट ऑफ पब्लिक हेल्थ-गांधीनगर

Uttar Pradesh State Heat Action Plan

लू-तापघात के लक्षण

अधिक गर्मी एवं लू के कारण होने वाली बीमारियाँ मुख्य रूप से दो प्रकार की होती हैं. हीट इग्जॉस्चन एवं हीट स्ट्रोक

हीट इग्जॉस्चन के लक्षण	हीट स्ट्रोक लक्षण
➤ अत्यधिक प्यास ➤ शरीर का तापमान बढ़ा हुआ (100.4°F से < 104°F) ➤ मासपेशियो में ऐंठन ➤ जी मिचलाना/उलटी होना ➤ सिर का भारीपन/सिरदर्द ➤ रक्त चाप का कम होना ➤ चक्कर आना ➤ भ्रांति/उलझन में होना ➤ अल्पमूत्रता/पेशाब का कम आना ➤ अधिक पसीना एवं चिपचिपी त्वचा	➤ शरीर का तापमान बढ़ा हुआ (> 104°F) ➤ पसीना आना बंद होना/पसीने की ग्रंथि का निष्क्रिय होना ➤ मांसपेशियों में ऐंठन, चिपचिपी त्वचा ➤ त्वचा एवं शरीर का लाल होना ➤ जी मचलाना/उल्टी होना, चक्कर आना ➤ सिर का भारीपन/सिरदर्द, चक्कर आना ➤ भ्रांति/उलझन में होना ➤ अल्पमूत्रता/पेशाब का कम आना ➤ मानसिक असंतुलन ➤ साँस की समस्या, श्वसन प्रक्रिया तथा धड़कन तेज होना

प्राथमिक उपचार	उपचार
• व्यक्ति को तुरत पंखे के नीचे तथा छायादार ठन्डे स्थान पर ले जाये. • कपड़ो को ढीला करें. • शरीर को गीले कपड़े से स्पंज करे. • ओ आर एस का घोल पिलाये. • निम्बू का पानी नमक के साथ पिलाये. • मांसपेशियों पर दबाव डालें तथा हल्की मालिश करें. • शरीर के तापमान को बार बार जाँचे. • यदि कुछ समय में सामान्य न हो तो तुरंत चिकित्सा केंद्र ले जाये.	• मरीज को तुरंत नजदीक के स्वास्थ्य केंद्र में ले जायें कपड़ो को ढीला करें. • तुरंत पंखे के नीचे तथा छायादार ठन्डे स्थान पर ले जाये, शरीर को गीले कपडे से स्पंज करे. • अगर मरीज कुछ पीने की अवस्था में हो तो पानी या शीतल पेय पिलायें . • ओ आर एस का घोल पिलायें. • निम्बू का पानी नमक के साथ पिलायें. • मांसपेशियों पर दबाव डाले तथा हल्की मालिश करे.

उत्तर प्रदेश राज्य आपदा प्रबंधन प्राधिकरण द्वारा जनहित में जारी
तकनीकी सहयोग यूनिसेफ, उत्तर प्रदेश एवं इंडियन इंस्टीट्यूट ऑफ पब्लिक हेल्थ-गांधीनगर

Uttar Pradesh State Heat Action Plan

लू-तापघात जानलेवा हो सकता है, इससे बचाव ही उपचार है.

ठंडक प्रदान करने वाले
पेय पदार्थ पियें

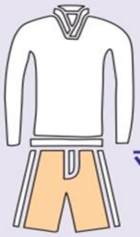

सफेद या हल्के रंग के
कपड़े पहनें

अधिक गर्मी में घर से
बाहर न निकलें

छाया में बैठकर विश्राम करें

बुजुर्गों, बच्चों एवं गर्भवती
महिलाओं का विशेष ध्यान रखें

घर की छत पर
चूने/सफेद रंग का पेन्ट करें

सिर पर गीला कपड़ा तथा
शरीर को कपड़े से ढककर
बाहर निकलें

प्यास की इच्छा न होने पर भी
बार-बार पानी पियें

उत्तर प्रदेश राज्य आपदा प्रबंधन प्राधिकरण द्वारा जनहित में जारी
तकनीकी सहयोग यूनिसेफ, उत्तर प्रदेश एवं इंडियन इंस्टीट्यूट ऑफ पब्लिक हेल्थ-गांधीनगर

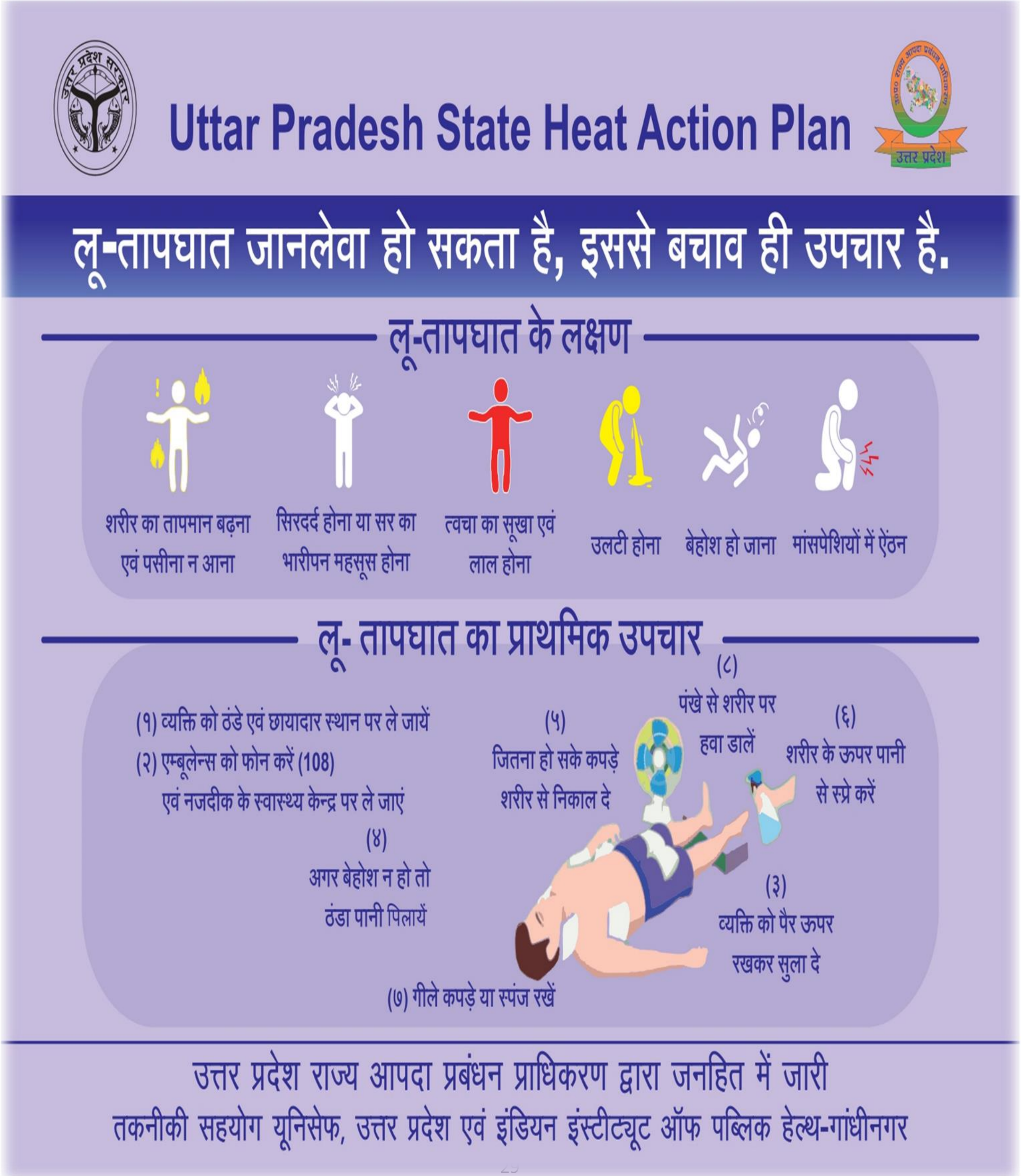

Uttar Pradesh State Heat Action Plan
उत्तर प्रदेश
लू-तापघात जानलेवा हो सकता है, इससे बचाव ही उपचार है.
लू-तापघात के लक्षण
शरीर का तापमान बढ़ना एवं पसीना न आना
सिरदर्द होना या सर का भारीपन महसूस होना
त्वचा का सूखा एवं लाल होना
उलटी होना
बेहोश हो जाना
मांसपेशियों में ऐंठन
लू- तापघात का प्राथमिक उपचार
(१) व्यक्ति को ठंडे एवं छायादार स्थान पर ले जायें
(२) एम्बूलेन्स को फोन करें (108) एवं नजदीक के स्वास्थ्य केन्द्र पर ले जाएं
(४) अगर बेहोश न हो तो ठंडा पानी पिलायें
(५) जितना हो सके कपड़े शरीर से निकाल दे
(८) पंखे से शरीर पर हवा डालें
(६) शरीर के ऊपर पानी से स्प्रे करें
(३) व्यक्ति को पैर ऊपर रखकर सुला दे
(७) गीले कपड़े या स्पंज रखें
उत्तर प्रदेश राज्य आपदा प्रबंधन प्राधिकरण द्वारा जनहित में जारी
तकनीकी सहयोग यूनिसेफ, उत्तर प्रदेश एवं इंडियन इंस्टीट्यूट ऑफ पब्लिक हेल्थ-गांधीनगर

Beat the Heat
Do's
Stay hydrated
Stay covered
Block direct sunlight
Remain indoors during 12:00 PM – 4:00 PM
Don'ts
Avoid going out 12:00 PM - 4:00 PM
Avoid strenuous activity in the sun
Don't leave kids and pets unattended in vehicles
Avoid alcohol, tea, coffee, sugary and fizzy drinks
Avoid cooking during 2:00 PM - 4:00 PM
Don't walk barefoot
ISSUED IN PUBLIC INTEREST BY DISTRICT DISASTER MANAGEMENT AUTHORITY AGRA
SHIVAM KUMAR MISHRA Disaster Expert Agra
SHUBHANGI SHUKLA ADM F/R Agra
BHANU CHANDRA GOSWAMI DM Agra
How to Survive Extreme Hea
Lower shades
Wear loose cott
Cool down with wet towels
Drink lo of wat
Take meds as prescribed
Neve leave kids/pets in cars
Go to a cooler place
Many heat-related deaths happen in over-heated apartments.
Make a plan for help
Seek health care if you have a throbbing headache, dizziness, nausea, or feel confused.
ISSUED IN PUBLIC INTEREST BY DISTRICT DISASTER MANAGEMENT AUTHORITY AGRA
SHIVAM KUMAR MISHRA Disaster Expert Agra
SHUBHANGI SHUKLA ADM F/R Agra
BHANU CHANDRA GOSWAMI DM Agra

उत्तर प्रदेश सरकार
उत्तर प्रदेश
स्टेट हीट एक्शन प्लान
उत्तर प्रदेश
लू-तापघात जानलेवा हो सकता है, इससे बचाव ही उपचार है.
ठंडक प्रदान करने वाले
पेय पदार्थ पियें
सफेद या हल्के रंग के सूती
कपड़े पहनें
अधिक गर्मी में घर से
बाहर न निकलें
छाया में बैठकर विश्राम करें
35°C
40°C
घर की छत पर
चूने/सफेद रंग का पेन्ट करें
बुज़ुर्गों, बच्चों एवं गर्भवती
महिलाओं का विशेष ध्यान रखें
सिर पर गीला कपड़ा रखें तथा
शरीर को कपड़े से ढककर
बाहर निकलें
प्यास की इच्छा न होने पर भी
बार-बार पानी पियें
उत्तर प्रदेश राज्य आपदा प्रबंधन प्राधिकरण द्वारा जनहित में जारी

उत्तर प्रदेश सरकार
उ०प्र० राज्य आपदा प्रबंधन प्राधिकरण
उत्तर प्रदेश
उत्तर प्रदेश स्टेट हीट एक्शन प्लान
लू-तापघात जानलेवा हो सकता है, इससे बचाव ही उपचार है.
लू-तापघात के लक्षण
शरीर का तापमान बढ़ना एवं पसीना न आना
सिरदर्द होना या सर का भारीपन महसूस होना
त्वचा का सूखा एवं लाल होना
उल्टी, दस्त होना
बेहोश हो जाना
मांसपेशियों में ऐंठन
लू- तापघात का प्राथमिक उपचार
(१) व्यक्ति को ठंडे एवं छायादार स्थान पर ले जायें
(२) एम्बुलेन्स को फोन करें (108) एवं नजदीक के स्वास्थ्य केन्द्र पर ले जाएं
(३) अगर बेहोश न हो तो ठंडा पानी पिलायें
(४) जितना हो सके कपड़े शरीर से निकाल दें
(५) गीले कपड़े या स्पंज रखें
(६) पंखे से शरीर पर हवा डालें
(७) शरीर के ऊपर पानी से स्प्रे करें
(८) व्यक्ति को पैर ऊपर रखकर सुला दें
उत्तर प्रदेश राज्य आपदा प्रबंधन प्राधिकरण द्वारा जनहित में जारी

BEAT THE HEAT
Water To Go
Take a bottle of Cold water with you when you're out and about.
Avoid
Alcohol, tea, coffee and hot, spicy and salty foods can make dehydration worse. So, think about avoiding them during hot weather.
Be Cool
Make use of fans or air-conditioners set to cool.
Rest
Make sure you get enough sleep and rest if you feel tired
Dress Down
Wear lightweight, light coloured, loose-fitting clothes made from natural fibres, like cotton or linen.
Enjoy
Try eating more cold foods, like salads and fruits. They contain water and are more refreshing in hot weather than hot foods.
Soak
Take a cool shower or bath to help you cool down when you feel hot.
Shade
Wear a hat or take an umbrella with you for shade if you're outside on a hot day.

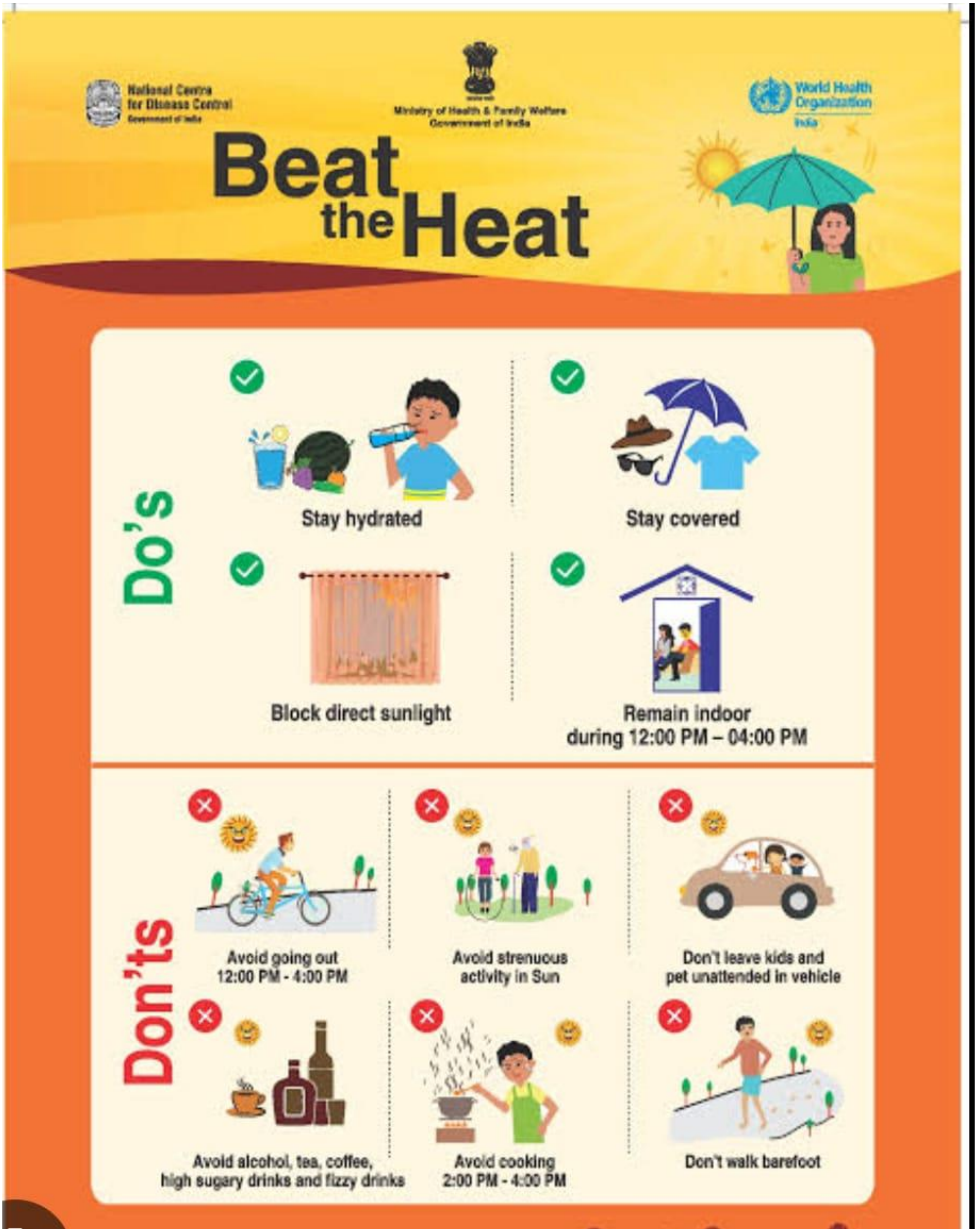
National Centre for Disease Control
Government of India
Ministry of Health & Family Welfare
Government of India
World Health Organization
India
Beat the Heat
Do's
Stay hydrated
Stay covered
Block direct sunlight
Remain indoor during 12:00 PM – 04:00 PM
Don'ts
Avoid going out 12:00 PM - 4:00 PM
Avoid strenuous activity in Sun
Don't leave kids and pet unattended in vehicle
Avoid alcohol, tea, coffee, high sugary drinks and fizzy drinks
Avoid cooking 2:00 PM - 4:00 PM
Don't walk barefoot

हीटवेव से संबंधित बीमारियों के प्रबंधन के लिये अभिनव कार्य/ बेस्ट प्रेक्टिसेज, उपाय (सामुदायिक जागरूकता, स्वास्थ्य सेवाओं की पूर्व तैयारी, कमजोर वर्ग के लिये सुरक्षात्मक उपाय, आंकडो का संग्रह एवं प्रतिवेदन तथा अन्य कार्य

(Innovative action /best practices / measure for management of heat related illness (Community Awareness, Health Facilities Preparedness, Preventing vulnerable population, data recording and reporting)

- प्रचार प्रसार हेतु आईईसी सामग्री को गर्मी के मौसम में मुद्रित करने का प्रस्ताव है। आई0ई0सी0 के माध्यम से जन–जागरूकता अभियान चलाना प्रभावकारी होगा।
- प्रचार माध्यमों द्वारा जनता को ''क्या करें, क्या न करें' ' के बारे में जानकारी देना तथा अन्तर्विभागीय समन्वय स्थापित करना।
- हीट वेव रोग में प्रभावी निरोधात्मक एवं प्राथमिक उपचार (फर्स्ट एड ट्रीटमेन्ट) की

  जानकारी चिकित्सकों द्वारा फार्मासिस्ट हेतु आवश्यक तथा महत्वपूर्ण है।
- आशा को O-R-S दिया जाएगा। अपने–अपने क्षेत्रों में फील्ड विजिट के दौरान घर–घर वितरण के लिए
- सभी स्वास्थ्य केन्द्रों पर गर्मी से होने वाली बीमारियों और विकार में काम आने वाली दवाइयां व उपकरण पर्याप्त मात्रा में उपलब्ध करा दिए गए हैं।

क्षमतावर्धन एवं प्रशिक्षण कार्यक्रम की रूप रेखा।

(Capacity Building & Profile of Training Programme)

मार्च के महीने में हीटवेव रोगों के शीघ्र निदान और प्रबंधन के बारे में जनपद स्तर पर संबन्धित अधिकारियों के साथ समन्वय स्थापित कर समयान्र्तगत प्रशिक्षण एवं जागरुकता कार्यक्रम के साथ अनेक प्रकार के मॉकड्रिल आयोजित कराये जाते है जिससे हीटवेव एवं अन्य आपदाओं से जौखिम को न्यून किया जा सके, अर्थात समयान्र्तगत प्रशिक्षण एवं जागरुकता कार्यक्रम के साथ अनेक प्रकार के मॉकड्रिलस प्रस्तावित किये जाते है।

दीर्घकालिक हीटवेव (लू) से सुरक्षा के उपाय।

(Long Term Heat Resilience Measures)

- यदि दिशा–निर्देशों में वृक्षारोपण के बारे में बजट मौजूद होगा तो वन एवं कृषि विभाग के साथ अंतर्क्षेत्रीय समन्वय स्थापित किया जाएगा। वृक्षारोपण लंबी अवधि के लिए गर्मी से बचाव का उपाय हो सकता है।
- भवन निर्माण नियमों का पालन करते हुए नई कॉलोनियों को अधिक हवादार बनाया जाए। यदि आवश्यक हो तो आवास मानकों के बारे में सलाह दी जाएगी।

सीखे (Lesson learnt)

हीटवेव रोगों से संबंधित डेटा और गतिविधियों का विश्लेषण किया जाएगा और सीखे गए सबक के साथ भविष्य की हीटवेव कार्य योजना में और सुधार किया जाएगा।

हीटवेव (लू) से संबंधित मामलों का अध्ययन (Case study)

अप्रैल से जून के महीने के दौरान हीट सिंकोप, हीट स्ट्रोक और अन्य हीट डिसऑर्डर से पीड़ित व्यक्तियों के विस्तृत केस स्टडी की योजना बनाये जाने की योजना प्रस्तावित कर ली गयी है।
शासन द्वारा प्राप्त दिशा–निर्देशों एवं बजट के आवंटन के अनुसार जनपद में जन समुदाय को हीट वेव से बचाने के लिये उच्च स्तर पर और अधिक कार्य किये जा सकते है।

महत्वपूर्ण मोबाइल नम्बर सूचीः—

क्र.सं.	अधिकारी का नाम	पदनाम	मोबाइल नं.
1	श्री भानु चन्द्र गोस्वामी	जिलाधिकारी	9454417509
2	श्री अंकित खंडेलवाल	नगर आयुक्त	8189077813
3	श्री शुभांगी शुक्ला	अपर जिलाधिकारी (वि./रा.)	9454417580
3	श्री अरूण श्रीवास्तव	मुख्य चिकित्साधिकारी	9454455313
4	श्री देवेन्द्र कुमार सिंह	मुख्य अग्निशमन अधिकारी	9454418338
5	श्री दिनेश कुमार	जिला विद्यालय निरीक्षण	9368056148
6	श्री जितेन्द्र कुमार गौंड़	जिला बेसिक शिक्षा अधिकारी	9453004085
7	श्री कुलदीप सिंह	महाप्रबन्धक जल कल विभाग	8192095201
8	श्री विनोद कुमार सिंह	जिला कृषि अधिकारी	8057901115
9	श्री मनीष कुमार	जिला पंचायत राज अधिकारी	8542984185
10	श्री अभिचल प्रताप सिंह	तहसीदार सदर	9454417672
11	श्री मांधाता	तहसीलदार एत्मादपुर	9454417674
12	श्री देवेन्द्र प्रताप	तहसीलदार किरावली	8756401689
13	श्री मनोज कुमार दोहरे	तहसीलदार खेरागढ़	9452613047
14	श्री आशीष त्रिपाठी	तहसीलदार फतेहाबाद	9582499078
15	श्री पी के सिंह	तहसीलदार बाह	9927498575